International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

ग्रामीण पर्यटनः अल्मोडा जनपद के जागेश्वर धाम के विशेष संदर्भ में एक अध्ययन

डां. दिनेश जोशी[1], डां. मनोज भोज[2], भुवन चन्द्र जोशी[3]

[1]सहायक प्राध्यापक आई0 पी0 राजकीय महिला महाविद्यालय हल्द्वानी।
[2]सहायक प्राध्यापक राजकीय महाविद्यालय गुरुडाबांज अल्मोडा, सो0सि0जीना वि0वि0अल्मोडा ।
[3]शोध छात्र, राजकीय महाविद्यालय कांडा, बागेश्वर सो0सि0जीना वि0वि0अल्मोडा ।

सार (Abstract)

ग्रामीण पर्यटन आधुनिक पर्यटन उद्योग का एक अत्यंत महत्वपूर्ण अंग बन चुका है। यह न केवल ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक संसाधनों का सृजन करता है, बल्कि स्थानीय संस्कृति, परंपरा, हस्तशिल्प, लोककला और प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण भी सुनिश्चित करता है। उत्तराखंड का अल्मोड़ा जनपद विशेष रूप से ग्रामीण पर्यटन की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है, जिसमें जागेश्वर धाम सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक तथा प्राकृतिक पर्यटन के समन्वित रूप का विशिष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है। यह शोध पत्र उत्तराखंड के अल्मोड़ा जनपद के जागेश्वर में ग्रामीण पर्यटन की संभावनाओं, उसके विकास से उत्पन्न प्रभावों और स्थानीय समुदाय पर इसके असर का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। जागेश्वर धाम, जो प्राचीन मंदिरों का एक समूह है, धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहर के रूप में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। अध्ययन के दौरान पाया गया कि पिछले पाँच वर्षों में यहाँ पर्यटकों की संख्या में वृद्धि हुई है, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिला है। हालांकि, पर्यावरणीय और सांस्कृतिक चुनौतियाँ भी उभर कर सामने आई हैं। यह शोध पत्र इन सभी पहलुओं का गहन विश्लेषण करता है और कुछ महत्वपूर्ण सुझाव भी प्रस्तुत करता है, जो इस क्षेत्र में पर्यटन के सतत विकास के लिए आवश्यक हैं।

संकेत शब्दः पर्यटन, ग्रामीण पर्यटन, संस्कृति, पर्यावरण होम स्टे ।

1. परिचय

भारत विविधताओं से भरा हुआ देश है, जिसकी पहचान इसकी सांस्कृतिक परंपराओं और प्राकृतिक धरोहरों से होती है। देवभूमि हिमालय की संस्कृति के प्रतिनिधि के रूप में अल्मोड़ा धार्मिक सांस्कृतिक क्षेत्र के रूप में विद्वत समाज के आकर्षक का केन्द्र रहा है। इस क्षेत्र की पर्वतमालाओं में विविध प्रागैतिहासिक, सांस्कृतिक अवशेष, आस्था के केन्द्र, धार्मिक स्थल और जनपद के चप्पे–चप्पे में फैली नैसर्गिक सुन्दरता देशी और विदेशी पर्यटकों को सहज ही अपनी ओर आकर्षित करती रही है। जनपद के अनेक स्थल धार्मिक और पयर्टन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। यहॉ अनेक प्रसिद्ध मंदिर है जिसमें प्रसि) जागेश्वर धाम, चितई गोलू देवता मंदिर, कटारमल स्थित ऐतिहासिक सूर्य मन्दिर, पातालदेवी, नंदादेवी मन्दिर, कसारदेवी मंदिर, विशेष रूप से उल्लेखनीय है। बिनसर वन्य जीव विहार, सिमतोला इको पार्क, राजकीय संग्रहालय, मल्ला महल, विवेकानन्द कृषि अनुसंधानशाला आदि प्रमुख दर्शनीय स्थल है। रानीखेत, द्वाराहाट, सोमेश्वर में कई धार्मिक एवं पर्यटन स्थल मौजूद है। जनपद में विगत 5 वर्षो में वर्षवार आने वाले पर्यटकों का विवरण निम्नानुसार है–

वर्षवार आने वाले पर्यटकों का विवरण

वर्ष	भारतीय	विदेशी	कुल
2019	123416	5258	128674
2020	38608	799	39407
2021	92292	171	92463
2022	227269	1658	228927
2023	235571	3040	238611

स्रोत– सामाजार्थिक समीक्षा वर्ष 2023–24 जनपद–अल्मोड़ा

ग्रामीण पर्यटन, आधुनिक विकास के बीच अपनी जड़ों की खोज के लिए पर्यटकों को ग्रामीण परिवेश से जोड़ता है। उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्र अपने सुरम्य प्राकृतिक सौंदर्य, धार्मिक स्थलों, शांत वातावरण और ग्रामीण जीवन शैली के कारण वैश्विक स्तर पर पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। अल्मोड़ा जिले का जागेश्वर धाम, जोकि ग्रामीण पर्यटन के केंद्र के रूप में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह क्षेत्र धार्मिक आस्था, पुरातत्त्व, प्राकृतिक जैव विविधता एवं स्थानीय संस्कृति से समृद्ध है। यहां ग्रामीण पर्यटन से स्थानीय लोगों के जीवन स्तर, आय, रोजगार, महिला सशक्तिकरण और स्थानीय व्यवसायों को नई दिशा मिली है। विश्व प्रसिद्ध जागेश्वर धाम का इतिहास 7वीं से 14वीं शताब्दी के बीच निर्मित 124 से अधिक मंदिरों के समूह का विशाल परिसर है जो कत्यूरी और चंद राजाओं द्वारा बनवाए गए थे और भगवान शिव को समर्पित हैं, जो इसे बारह ज्योतिर्लिंगों में आठवाँ ज्योतिर्लिंग भी मानते हैं। जागेश्वर धाम समुद्र तल से लगभग 1870 मीटर की ऊँचाई पर, अल्मोड़ा से लगभग 36 किलोमीटर दूर स्थित है। यह घने देवदार वनों, जलधाराओं और हिमालयी पर्वत शृंखलाओं से घिरा हुआ क्षेत्र है। शिव पुराण के अध्याय 13 में भी इसका जिक्र किया गया है कि ज्योतिर्लिङ्ग की सर्वप्रथम उत्पत्ति दारुकावन में ही हुई थी इसकी स्थापना उत्तराखंड के नाग शासकों द्वारा की गई थी इसके इस नामकरण के विषय में कहा जाता है कि किसी समय युद्ध में विजयी के उपलक्ष्य में उन्होंने यहाँ पर एक महायज्ञ करवाया था तथा इस अवसर पर भगवान शंकर के इस ज्योतिर्लिङ्ग की स्थापना करवाई गई थी इसी कारण इसे यज्ञेश्वर या जागेश्वर के नाम से जाना गया था

स्रोत– https://www.euttaranchal.com/tourism/jageshwar-photos.php

यहाँ का प्रमुख मेला श्रावणी मेला है, जो हिंदू पंचांग के अनुसार सावन माह में लगता है, जिसमें ब्रह्मकुंड और जटा गंगा में स्नान का महत्व है, और महाशिवरात्रि पर विशेष पूजा होती है। भारत में धार्मिक पर्यटन का एक महत्वपूर्ण स्थान है, जिसमें उत्तराखंड के धार्मिक स्थल विशेष महत्त्व रखते हैं। इन स्थलों में जागेश्वर धाम का उल्लेखनीय स्थान है, जो अल्मोड़ा जिले के घने देवदार के जंगलों में

स्थित है। यह स्थल न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि पर्यावरणीय और सांस्कृतिक धरोहर के रूप में भी अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है।

स्रोत– https://www.google.com/search?q=image+of+jageshwar&rlz

1.1 ग्रामीण पर्यटन की अवधारणाः– भारत एक ऐसा देश है जो अपनी विविधता, संस्कृति, और धार्मिक धरोहर के लिए विश्व प्रसिद्ध है। इन सभी पहलुओं का संगम धार्मिक स्थलों में देखने को मिलता है, जो न केवल आस्था का केंद्र हैं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक विकास के महत्वपूर्ण स्रोत भी हैं। उत्तराखंड राज्य, जिसे देवभूमि कहा जाता है, अपने धार्मिक स्थलों के लिए जाना जाता है, जिनमें जागेश्वर धाम का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह स्थल न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि अपनी अद्वितीय वास्तुकला,प्राकृतिक सौंदर्य और ऐतिहासिक महत्त्व के कारण भी प्रसिद्ध है। ग्रामीण पर्यटन एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें गाँवों और छोटे कस्बों में पर्यटन को बढ़ावा दिया जाता है। यह न केवल पर्यटकों को ग्रामीण जीवन का अनुभव करने का अवसर प्रदान करता है, बल्कि स्थानीय समुदायों के लिए आर्थिक अवसर भी उत्पन्न करता है। ग्रामीण पर्यटन के अंतर्गत पर्यटक गाँवों में रहकर वहाँ की सांस्कृतिक गतिविधियों, कृषि, हस्तशिल्प, और अन्य परंपराओं से रूबरू होते हैं। यह अवधारणा सतत विकास और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के लिए महत्वपूर्ण मानी जाती है।

1.2 जागेश्वर धाम का धार्मिक और सांस्कृतिक महत्वः– जागेश्वर धाम, अल्मोड़ा जिले के घने देवदार के जंगलों में स्थित, एक प्राचीन शिव मंदिर समूह है, जिसमें लगभग 124 छोटे–बड़े मंदिर शामिल हैं। यह स्थल हिन्दू धर्म के बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक माना जाता है। धार्मिक महत्व के साथ–साथ जागेश्वर धाम का सांस्कृतिक महत्व भी है, क्योंकि यह क्षेत्र कुमाऊँनी संस्कृति का प्रतीक है। यहाँ प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में श्रद्धालु और पर्यटक आते हैं, जो धार्मिक अनुष्ठानों के साथ–साथ प्राकृतिक सौंदर्य का भी आनंद लेते हैं।

1.3 जागेश्वर धाम में ग्रामीण पर्यटन की संभावनाएँः– जागेश्वर धाम में धार्मिक पर्यटन के साथ–साथ ग्रामीण पर्यटन की भी अपार संभावनाएँ हैं। यहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य, शांत वातावरण, और ग्रामीण जीवनशैली पर्यटकों को आकर्षित करने की क्षमता रखते हैं। ग्रामीण पर्यटन के माध्यम से स्थानीय समुदायों को रोजगार के नए अवसर मिल सकते हैं, और साथ ही, क्षेत्र के सांस्कृतिक और पर्यावरणीय धरोहर को संरक्षित करने में भी सहायता मिल सकती है। जागेश्वर में ग्रामीण पर्यटन की संभावनाओं एवं ग्रामीण पर्यटन के आयामों का अध्ययन करने के लिए किए गए सर्वेक्षण के आधार पर निम्न निष्कर्ष निकले–

कृषि पर्यटन	20.7% जनता ने माना है कि कृषि पर्यटन की सम्भावना है।
धार्मिक एवं सांस्कृतिक पर्यटन	24 % जनता ने माना है कि धार्मिक एवं सांस्कृतिक पर्यटन की सम्भावना है।
साहसिक पर्यटन	5.6 % जनता ने माना है कि साहसिक पर्यटन की सम्भावना है।
उपरोक्त सभी	49.7% जनता ने माना है कि उपरोक्त सभी की सम्भावना है।

जागेश्वर में ग्रामीण पर्यटन के कौन कौन से रूप देखे जा सकते हैं ? इस प्रश्न के उत्तर के रुप में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए–

धार्मिक पर्यटन	58.3%
कृषि पर्यटन	25%
सांस्कृतिक पर्यटन	8.3%
पुरातात्विक पर्यटन	8.3%

अतः उपरोक्त विवरण के आधार पर कहा जा सकता है कि जागेश्वर क्षेत्र में ग्रामीण पर्यटन के अलग–अलग स्वरुप संभव हें।

जागेश्वर क्षेत्र में होम–स्टे योजना का उभरता स्वरुप–

जागेश्वर अल्मोड़ा जनपद के धौला देवी विकास खंड में स्थित है इस क्षेत्र में पर्यटकों के आवास हेतु होटल के आलावा बहुत सरे होम स्टे भी बन चुके हैं जो पर्यटकों को वहा के ग्रामीण रहन–सहन,रीती–रिवाज, खान–पान का अनुभव कराते हैं जागेश्वर एवं उसके आसपास लगभग 20 से 25 होम स्टे हैं जिनको उनकी स्थिति के आधार पर अलग अलग श्रेणिया दी गई है ये श्रेणियां हैं गोल्ड सिल्वर एवं ब्रांज।

जागेश्वर क्षेत्र में होम–स्टे

श्रेणि	**गोल्ड**	**सिल्वर**	**ब्रांज**	**कुल संख्या**
होम स्टे की संख्या	05	14	02	21

स्रेत– प्र्यअन विभाग अल्मोडा

1.4 अनुसंधान की आवश्यकताः– हालाँकि जागेश्वर धाम का धार्मिक महत्त्व स्पष्ट है, लेकिन इसके ग्रामीण पर्यटन के विकास के लिए गंभीर अध्ययन और योजनाओं की आवश्यकता है। इस क्षेत्र में पर्यटन के विकास के लिए एक समग्र दृष्टिकोण अपनाने की जरूरत है, जिसमें आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, और पर्यावरणीय पहलुओं का ध्यान रखा जाए। यह शोध इस दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है, जिसका उद्देश्य जागेश्वर धाम में ग्रामीण पर्यटन की संभावनाओं, चुनौतियों, और इसके प्रभावों का विश्लेषण करना है।

1.5 अनुसंधान का महत्वः– इस अध्ययन का महत्व इस तथ्य में निहित है कि यह ग्रामीण पर्यटन के विकास के लिए एक मॉडल प्रस्तुत कर सकता है, जिसे उत्तराखंड के अन्य ग्रामीण क्षेत्रों में भी लागू किया जा सकता है। इसके अलावा, यह शोध जागेश्वर धाम में पर्यटन के सतत विकास के लिए नीतिगत सुझाव देने में सहायक होगा, जिससे स्थानीय समुदायों को अधिक से अधिक लाभ मिल सकेगा और क्षेत्र की सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित रखा जा सकेगा।

2. शोध का उद्देश्य

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य जागेश्वर धाम में ग्रामीण पर्यटन की संभावनाओं, उसके विकास की प्रक्रिया और इससे स्थानीय समुदाय पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण करना है। इसके उप–उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

1. **पर्यटन के आर्थिक प्रभावों का अध्ययन–** जागेश्वर धाम में पर्यटन से उत्पन्न रोजगार और आर्थिक अवसरों का विश्लेषण करना।
2. **सांस्कृतिक और सामाजिक प्रभावों का विश्लेषण–** ग्रामीण पर्यटन के कारण जागेश्वर धाम और आसपास के क्षेत्रों की संस्कृति और समाज पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।
3. **पर्यावरणीय प्रभावों का मूल्यांकन–** पर्यटन के कारण जागेश्वर धाम के प्राकृतिक संसाधनों और पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभावों की जांच करना।

4. **स्थानीय समुदाय की सहभागिता–** ग्रामीण पर्यटन में स्थानीय समुदाय की सहभागिता और इससे उत्पन्न लाभों का विश्लेषण करना।
5. **पर्यटन विकास की चुनौतियाँ और संभावनाएँ–** जागेश्वर धाम में पर्यटन के विकास से संबंधित चुनौतियों और संभावनाओं का अध्ययन करना।

3. जागेश्वर धाम में पर्यटकों की प्रवृत्ति

पिछले पाँच वर्षों में जागेश्वर धाम में पर्यटकों की संख्या में महत्वपूर्ण परिवर्तन देखे गए हैं–

तलिका: पिछले पाँच वर्षों में जागेश्वर धाम में आने वाले पर्यटकों की अनुमानित संख्या

वर्ष	भारतीय पर्यटक	विदेशी पर्यटक	कुल पर्यटक
2019	45,000	5,000	50,000
2020	20,000	2,000	22,000
2021	30,000	3,000	33,000
2022	55,000	6,000	61,000
2023	70,000	8,000	78,000

इस तालिका से स्पष्ट है कि COVID&19 महामारी के कारण 2020 में पर्यटकों की संख्या में गिरावट आई, लेकिन उसके बाद से इसमें निरंतर वृद्धि देखी गई है।

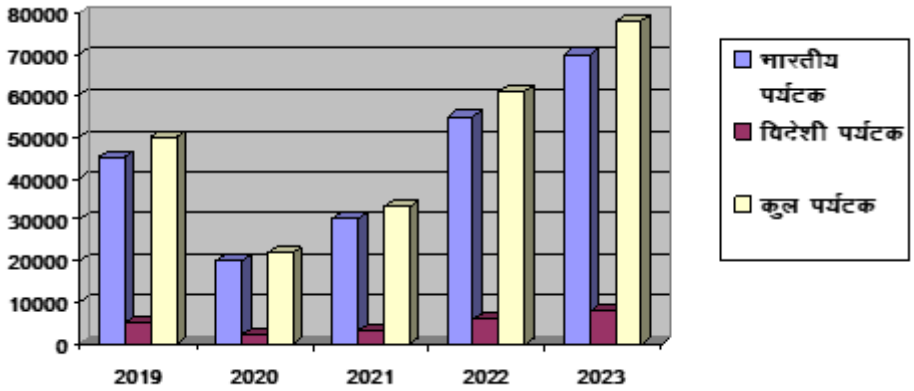

बार डायग्राम– पिछले पाँच वर्षों में जागेश्वर धाम में आने वाले पर्यटकों की संख्या

5. प्राथमिक डेटा से निष्कर्ष

प्राथमिक डेटा के निष्कर्षों को सारणीबद्ध रूप में प्रस्तुत किया गया है–

विषय	प्राथमिक निष्कर्ष
आर्थिक प्रभाव	70% स्थानीय निवासियों को रोजगार के नए अवसर मिले। 25–30% की आय वृद्धि हुई।
सांस्कृतिक प्रभाव	60% लोगों ने संस्कृति के संरक्षण की पुष्टि की।

पर्यावरणीय प्रभाव	50% लोगों ने पर्यावरणीय दबाव की पुष्टि की। 30% ने पर्यावरण संरक्षण के कदमों को अपर्याप्त बताया
पर्यटकों की संतुष्टि	80% पर्यटक प्राकृतिक सुंदरता और धार्मिक महत्व से संतुष्ट। 40% ने स्थानीय सुविधाओं में सुधार की आवश्यकता बताई।
स्थानीय सहभागिता	65% लोगों ने पर्यटन से लाभ होने की पुष्टि की। 35% ने निर्णय प्रक्रिया में शामिल न होने की शिकायत की।

6. ग्रामीण पर्यटन का स्थानीय समुदाय पर प्रभाव

6.1 आर्थिक प्रभाव–

रोजगार के अवसर– ग्रामीण पर्यटन से रोजगार के अवसर उत्पन्न हुए हैं, जिससे स्थानीय निवासियों की आय में वृद्धि हुई है।

स्थानीय उत्पादों का विपणन– पर्यटक स्थानीय उत्पादों को खरीदते हैं, जिससे स्थानीय व्यवसायों को बढ़ावा मिलता है।

6.2 सामाजिक प्रभाव–

संस्कृति और परंपराओं का संरक्षण– ग्रामीण पर्यटन से स्थानीय संस्कृति का संरक्षण हुआ है, लेकिन इसके साथ ही बाहरी संस्कृति के प्रभाव से कुछ सांस्कृतिक परिवर्तन भी हुए हैं।

सामाजिक परिवर्तन– बाहरी पर्यटकों के आगमन से स्थानीय समाज में सांस्कृतिक बदलाव आए हैं।

6.3 पर्यावरणीय प्रभावः

पर्यावरणीय चुनौतियाँ– अधिक संख्या में पर्यटकों के आने से प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव बढ़ा है, जिससे पर्यावरणीय चुनौतियाँ उत्पन्न हुई हैं।

संरक्षण के प्रयास– पर्यटन विकास के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण की दिशा में प्रयास किए गए हैं, जैसे कि जैविक कृषि और सतत विकास के लिए पर्यटकों को प्रोत्साहित करना।

7. निष्कर्ष और सुझाव

7.1 निष्कर्षः जागेश्वर धाम में ग्रामीण पर्यटन की संभावनाएँ अत्यधिक हैं और यह क्षेत्र धार्मिक, सांस्कृतिक और प्राकृतिक पर्यटन के लिए उपयुक्त है। यदि इसे सही दिशा में विकसित किया जाए, तो यह स्थानीय समुदाय के लिए आर्थिक रूप से लाभदायक हो सकता है और साथ ही पर्यावरणीय और सांस्कृतिक धरोहर को भी संरक्षित कर सकता है।

7.2 सुझावः

पर्यटन ढांचे का विकास– बेहतर सड़कें, आवास, और स्वच्छता सेवाएं प्रदान की जाएं ताकि पर्यटकों के लिए सुविधाएँ उपलब्ध हों।

स्थानीय समुदाय की भागीदारी– स्थानीय निवासियों को पर्यटन के विकास में शामिल किया जाए, ताकि वे इसका लाभ उठा सकें और इससे उनकी आजीविका में सुधार हो सके।

पर्यावरण संरक्षण– पर्यटन विकास के दौरान पर्यावरण संरक्षण को प्राथमिकता दी जाए और पर्यावरणीय शिक्षा के माध्यम से पर्यटकों को जागरूक किया जाए।

संस्कृति का संरक्षण– स्थानीय संस्कृति और परंपराओं का संरक्षण किया जाए और इसे पर्यटन के माध्यम से प्रोत्साहित किया जाए।

संदर्भ (References)

1. उत्तराखंड पर्यटन विकास बोर्ड की वार्षिक रिपोर्ट, 2023
2. उत्तराखंड सांख्यिकी विभाग, पर्यटन आँकड़े, 2019–2023
3. शर्मा, आर. (2022). उत्तराखंड में धार्मिक पर्यटन का महत्व. प्रकाशनः इंडियन काउंसिल ऑफ सोशल साइंस रिसर्च (ICSSR)

4. सिंह, ए. (2021). ग्रामीण पर्यटन और उसका प्रभावः उत्तराखंड का अध्ययन. प्रकाशनः नॉर्थर्न बुक सेंटर
5. जोशी, एम. (2020). उत्तराखंड के धार्मिक स्थलों की सांस्कृतिक धरोहर. प्रकाशनः प्राइमस बुक्स
6. भारत सरकार, संस्कृति मंत्रालय की रिपोर्ट, 2021
7. पांडे, एस. (2019). भारत के धार्मिक स्थलों का सामाजिक–आर्थिक प्रभाव. प्रकाशनः रूटलेज इंडिया
8. त्रिपाठी, वी. (2023). उत्तराखंड में पर्यटन और पर्यावरणीय प्रभावः एक अध्ययन. प्रकाशन ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस
9. चौहान, के. (2022). स्थानीय समुदाय और पर्यटनः उत्तराखंड के ग्रामीण क्षेत्रों का विश्लेषण. प्रकाशन सेज पब्लिकेशन्स
10. https://almora.nic.in/hi/
11. कुमाऊँ विश्वविद्यालय की शोध पत्रिका, खंड 45, अंक 3, 2022
12. जोशी, एन. (2020). जागेश्वर धाम का सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व. प्रकाशनः पेंगुइन रैंडम हाउस
13. पटेल, डी. (2023). भारत में धार्मिक पर्यटनः ऐतिहासिक और आधुनिक संदर्भ. प्रकाशनः ओरिएंट ब्लैकस्वान
14. बिष्ट, ए. (2021). उत्तराखंड में ग्रामीण पर्यटन की संभावनाएँ और चुनौतियाँ. प्रकाशनः बुक्स
15. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की रिपोर्ट, 2020–21
16. सामाजार्थिक समीक्षा वर्ष 2023–24 जनपद–अल्मोड़ा